यीशु मसीह के कारण ही है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

जब हम वर्ष के अंत के करीब पहुँचते हैं, तो यह एक विशेष समय होता है अपने जीवन पर विचार करने, ठहरने और भगवान का धन्यवाद करने का, जो उन्होंने हम पर पूरे वर्ष में किया। भगवान को धन्यवाद देने का सबसे बड़ा कारण है उसने हमें जीवन दिया।

साल भर की यात्रा में हम कई परिस्थितियों से गुज़रे, लेकिन हम अभी भी जीवित हैं। सूरज हर दिन उगता और ढलता है, हमने पूरे वर्ष में भूकंप नहीं झेले, युद्ध नहीं किए, भगवान ने हमें अनेक आपदाओं और बीमारियों से बचाया, और जब हम बीमार पड़े, तब उन्होंने हमें ठीक किया। क्या आपको लगता है कि यह सब हमारी वजह से हुआ?

क्या यह हमारे धार्मिक होने की वजह से है? हमारे पूरे भोजन, हमारी देखभाल, अच्छे जीवनशैली, न्याय, पवित्रता, हमारे प्रयासों से ईश्वर को खोजने का जोश, अच्छे कर्म, उपवास, प्रार्थना, चर्च में योगदान या उदारता की वजह से है?

नहीं! इनमें से कोई भी कारण नहीं है कि हमारे स्वर्गीय पिता हमें आशीष दें, जीवन दें या सूरज को चमकाएँ।

तो सवाल यह उठता है: यदि यह सब हमारे कारण नहीं है, तो हम वर्ष को सुरक्षित रूप से समाप्त क्यों कर रहे हैं? यदि यह हमारी पवित्रता या प्रयासों के कारण नहीं है, तो हम यह कृपा कैसे प्राप्त कर रहे हैं?

यीशु मसीह के कारण ही है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

उत्तर सरल है: यह एक ही व्यक्ति की धर्मपरता, पवित्रता, कर्म और प्रार्थना के कारण है – और वह व्यक्ति है प्रभु यीशु मसीह, जिसे स्वर्गीय पिता ने प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया।

स्वर्गीय पिता दुनिया में हजारों लोगों में संतुष्ट नहीं हुए; उन्होंने एक भी धर्मी नहीं देखा। सभी ने पाप किया और दोषपूर्ण जीवन बिताया।

भजन संहिता 14:2-3:

“प्रभु ने स्वर्ग से मनुष्य को देखा, कि क्या कोई बुद्धिमान है, जो परमेश्वर को खोजता है। सब ने भटके, सब भ्रष्ट हुए; कोई भी भला नहीं करता, नहीं, एक भी नहीं।”

यदि धरती पर कोई भी धर्मी नहीं है, तो क्या कोई उसकी धर्मपरता के कारण आशीष का पात्र हो सकता है? कोई नहीं! हम सभी नश्वर हैं। इसलिए कोई ऐसा व्यक्ति स्वर्ग से आना चाहिए, जो धर्मी हो और भगवान से आशीष ग्रहण कर सके।

और वह व्यक्ति केवल यीशु मसीह हैं। वह अकेले सम्पूर्णतया पाप रहित जीवन जीते हैं। उन्होंने पिता की नजर में धर्मीता पाई:

यीशु मसीह के कारण ही है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

“यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिसमें मुझे प्रसन्नता है।” (मत्ती 3:17)
यह “मेरे प्रिय पुत्रों” नहीं, बल्कि एक ही पुत्र है – उनकी धर्मपरता के कारण हमें आशीष मिली।

मत्ती 21:5-9:

“बोलो, सियोन की कन्या, देखो, तुम्हारा राजा तुम्हारे पास आता है, विनम्र, गधे और गधे के बच्चे पर सवार। शिष्यों ने जाकर जैसा यीशु
ने उन्हें आदेश दिया, वैसा किया। उन्होंने गधे और उसके बच्चे को
लाया और अपने वस्त्र उन पर डाले, और वह उस पर बैठा। भीड़ ने अपने वस्त्र रास्ते में बिछाए; कुछ ने पेड़ की डालियाँ काटकर रास्ते
में बिछाई। भीड़ ने पुकार लगाई: होसन्ना दाविद के पुत्र को; जो
प्रभु के नाम से आता है वह धन्य है; आकाश में होसन्ना।”

इसलिए केवल एक ही धन्य है – यीशु मसीह, जो कभी नहीं मरे और न ही नाश पाए। यीशु, हमारे प्रभु ने हमें, जो अपूर्ण हैं, पिता की प्रसन्नता के अनुसार धन्य किया और हमें अपनी कृपा में शामिल किया।

इसलिए, जब हम इस वर्ष को समाप्त कर रहे हैं, तो हमारे अपने कार्यों पर गर्व नहीं करना चाहिए, बल्कि यीशु मसीह के कार्यों के कारण, जिन्होंने पृथ्वी पर पिता को प्रसन्न किया। यह हमारी मेहनत के कारण नहीं है, बल्कि यीशु की दया के कारण है।

यीशु मसीह के कारण ही है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

हम स्वयं धन्य नहीं हैं – यीशु अकेले धन्य हैं। हम केवल उनके आशीष में भाग लेने के लिए आमंत्रित हैं। इसलिए हमें यीशु मसीह को पहचानना, धन्यवाद देना और विनम्रता से कहना चाहिए: “प्रभु, धन्यवाद!”

साल की शुरुआत से लेकर अंत तक, हर चीज़ के लिए धन्यवाद दें। यदि आप बीमार हैं, तो भी धन्यवाद करें। यदि आप इस वर्ष अपनी इच्छाएँ पूरी नहीं कर पाए, तब भी धन्यवाद करें कि आप अभी जीवित हैं।

धन्यवाद कि आप विश्वास में हैं और नहीं गिरे। धन्यवाद कि उन्होंने आपको बुराई से बचाया। धन्यवाद कि आप जीवित हैं और प्रभु की खोज में हैं, प्रार्थना और उपवास कर रहे हैं। वरना हम सभी नर्क के भागी होते।

अपने जीवन के हर क्षेत्र के लिए धन्यवाद दें और आने वाले वर्ष में अधिक कृपा के लिए प्रार्थना करें। उन्हें और अधिक खोजें, उनके और करीब जाएँ और उनकी शक्ति को जानें। वे आपको संसार और उसकी चीज़ों पर विजय प्राप्त करने की कृपा देंगे।

प्रभु आपको बहुत आशीष दे!

Share on:
WhatsApp

Print this post